जिस हाल में, जिस देश में ....

जिस हाल में, जिस देश में, जिस वेश में रहो।
राधारमण .... राधारमण .... राधारमण कहो ।

जिस काम में, जिस धाम में, जिस नाम में रहो ।
राधारमण .... राधारमण .... राधारमण कहो ।

संसार में, परिवार में, घरबार में रहो ।
राधारमण .... राधारमण .... राधारमण कहो ।

जिस रंग में, जिस ढंग में, जिस संग में रहो ।
राधारमण .... राधारमण .... राधारमण कहो ।

जिस देह में, जिस गेह में, वैराग में रहो ।
राधारमण .... राधारमण .... राधारमण कहो ।

जिस राग में, अनुराग में, वैराग में रहो ।
राधारमण .... राधारमण .... राधारमण कहो ।

जिस मान में, सम्मान में, अपमान में रहो ।
राधारमण .... राधारमण .... राधारमण कहो ।

जिस योग में, जिस भोग में, जिस रोग में रहो ।
राधारमण .... राधारमण .... राधारमण कहो ।

इहलोक में, परलोक में, गोलोक में रहो ।
राधारमण .... राधारमण .... राधारमण कहो ।

दसों इन्द्रियाँ अश्वदस, उच्छृंखल बलवान।
मन को मानो सारथी, ले वह निपुण सुजान।।